सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2024 का द्वादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित **'संस्कृत साहित्यकार महिलाएं'** नामक लेख में वेद में महिलाओं के प्राचीनकाल में महत्त्व को बताया है। तत्पश्चात् डॉ. प्रवीण पण्ड्या द्वारा लिखित **'शबरी के राम और कुब्जा के कृष्ण'** लेख में शबरी का श्रीराम के प्रति स्नेह तथा श्रीकृष्ण का कुब्जा के प्रति भगवत् भाव को बताया है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित **'उपनिषद् तत्त्व'** लेख में उपनिषदों में ओमकार रहस्य को बताया है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित **'दमयन्ती'** की कथा का वर्णन है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा